जब नतीजा आया तो– ''दीनदयाल उपाध्याय का नाम तो तालिका में सबसे ऊपर है। यहां दृष्य में बहुत से उम्मीदवार।''
किंतु नौकरी करना तो उनकी वृत्ति में था ही नहीं। सदा अव्वल आने वाले दीनदयाल ने अपने करियर की चिंता कभी की ही नहीं। उन्होंने अपने ममेरे भाई और मामा को पत्र लिखे–
''प्रिय बनवारी, मैंने एक स्वयंसेवक का जीवन संघ कार्य हेतु चुना है। यह मार्ग कॉटों से परिपूर्ण है, किंतु मैं अपना समस्त जीवन समाज को अपर्ण करना चाहता हूँ। क्या समाज का कार्य एक नौकरी के बराबर भी महत्व नहीं रखता? भावना से कर्त्तव्य ऊंचा है। राश्ट्र कार्य व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर है।
''क्या आप एक बेटा समाज को नहीं दे सकते? संघ के विशय में अधिक जानकारी न होने के कारण आप डर गए हैं। संघ केवल हिंदुओं के संगठन का एवं समाज के पतन को रोकने का काम करता है।'' उन्होंने आगे लिखा–